

डॉ. अगस्त कोकेल, नीतिवचन, सत्र 3

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कुंकेल हैं। यह सत्र संख्या तीन है, व्याख्यान एक, द गैंग, द कॉल ऑफ लेडी विजडम।

व्याख्यानों की इस श्रृंखला में हमारे तीसरे सत्र, नीतिवचन में आपका फिर से स्वागत है।

पिछले सत्र में, हमें नीतिवचन 1, छंद 1 से 7 से परिचित कराया गया था। यहां हम शिक्षण के पूरे खंड से परिचित होना चाहते हैं, जिसके बारे में हमने कहा था कि अधिकांश अध्याय 1 से 9 तक थे। नीतिवचन के शिक्षण के इस खंड में एक है बातचीत का सिलसिला. मैंने उन्हें व्याख्यान कहा है। यह एक बुरा शब्द हो सकता है क्योंकि जब आप किसी व्याख्यान के बारे में सोचते हैं, तो आप एक प्रोफेसर के बारे में सोच सकते हैं, शायद मेरे जैसा कोई व्यक्ति, जो कक्षा में सबसे आगे लगातार घूमता रहता है और कुछ ही मिनटों में सबसे प्रतिभाशाली दिमागों को निष्क्रिय कर सकता है।

खैर, ये बिल्कुल भी ऐसी बात नहीं है। वे एक बात कर रहे हैं. वे एक पिता हैं जो हमेशा अपने बेटे को संबोधित करते हैं, जो एक सामान्य शब्द है।

इसे हिब्रू भाषा में जानना चाहिए. हिब्रू भाषा, दुनिया की कई भाषाओं की तरह, संज्ञाओं के कार्य को सक्षम करने में लिंग के उपयोग से अलग है। तो, आप नहीं जानते कि संज्ञा एक विषय है, एक वस्तु है, एक अप्रत्यक्ष वस्तु है, या एक जननवाचक है।

यह उस तरीके के साथ चलता है जिससे किसी संज्ञा की पहचान उसके लिंग के आधार पर की जाती है, जो कभी-कभी थोड़ा भ्रम पैदा करता है जब संज्ञा वास्तव में कामुकता के लिंग भेद को भी शामिल करती है, जैसे बेटा या बेटी। और इसलिए इस संबंध में अधिकांश भाषाएँ सामान्य हो जाती हैं और समावेशी हो जाती हैं। हिब्रू में बेटा शब्द का यही अर्थ है।

और अंग्रेजी भाषा मैन शब्द के साथ ऐसा ही करती थी। लेकिन निःसंदेह, वह सब बदल गया है। तो यहां हमारे पास पिता बच्चे का परिचय दे रहा है, और आप पाएंगे कि पहले नौ अध्यायों में ऐसा विशेष रूप से 10 बार हो रहा है।

अब, पहले नौ अध्यायों की इन 10 छोटी वार्ताओं के बीच विभिन्न अंतराल और अन्य प्रकार की जानकारी दी गई है। लेकिन हम पहली बातचीत से शुरुआत करने जा रहे हैं। अब, चर्चा यहां क्यों शुरू होती है, परिचय के तुरंत बाद, जिसके बाद इस अध्याय में लेडी विजडम का आह्वान होता है, यह अब हमारे लिए स्पष्ट नहीं है।

हम नहीं जानते कि नीतिवचनों का संग्रह कैसे हुआ। यह काफी समझदार है क्योंकि नीतिवचन जो करता है वह उस तरीके का परिचय देता है जिसमें ये बातचीत होती है। तो यहाँ पहला है.

हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा सुन। अपनी माँ की शिक्षा पर ध्यान दो, क्योंकि वह तुम्हारे गले में अनुग्रह की माला है। यह आपके सिर पर पुष्पमाला है।

सबसे विशिष्ट और सम्मानजनक चीज जो आप कभी कर सकते हैं, सामाजिक संबंधों के मामले में आपको जो सर्वोच्च स्थान मिल सकता है, जहां तक बुद्धिमान व्यक्ति का सवाल है, वह आपके माता-पिता की बात सुनने से शुरू होती है। अपने पिता और अपनी माता का आदर करो। यह उस व्यक्ति का रवैया है जो प्रभु का भय मानता है।

और इसलिए, ये सारी बातचीत इसी तरह से शुरू होती है। आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसे जानने की जरूरत है। जीवन कौशल यूँ ही स्वाभाविक रूप से नहीं आते।

और उनके लिए उस ज्ञान का एक स्रोत है। और वह तार्किक स्रोत वे लोग हैं जिन्होंने आपको जीवन दिया ताकि आप अब एक परिवार का हिस्सा हों और इस दुनिया में हों। तो यह एक धारणा है कि समाज किस बुनियादी तरीके से काम करेगा।

जैसा कि मेरी मां एक कहावत में कहा करती थीं, जैसा घर होता है, वैसा ही राष्ट्र होता है। समाज हमेशा घरों के आसपास संरचित होता है। और घरों में बच्चों के बारे में यह जानकारी अवश्य शामिल होनी चाहिए कि उनके वास्तविक जैविक माता-पिता कौन हैं।

ये तो हर बच्चा जानना चाहता है। उस नियम का कोई अपवाद नहीं है। हर बच्चा ऐसा नहीं करता।

यह परिवार के विघटन की दुखद वास्तविकता है। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा ऐसा हो जो उन्हें समझे, उनकी बात सुने और उनका सम्मान करे। यह सिर्फ एक जन्मजात रिश्ता है, एक ऐसा बंधन जिसे तोड़ा नहीं जा सकता, चाहे हम परिवार को फिर से परिभाषित करने का कितना भी प्रयास करें।

खैर, जो व्यक्ति भगवान से डरता है और बुद्धिमान व्यक्ति वह जानता है। इसलिए, शिक्षण परिवारों में होता है। और हमारे पास धर्मग्रंथ में इसके छोटे-छोटे अंश हैं।

1 राजा 1.6 में, दाऊद के घराने के भीतर विद्रोह होने का कारण यह था कि वह अदोनियाह को अनुशासित करने में विफल रहा था, और उसे सही करने में विफल रहा था। तो, एक कहावत इस पैतृक निर्देश को प्रदान करती है और उसका प्रतिनिधित्व करती है। यह कोई कक्षा नहीं है, लेकिन ये छोटी-छोटी बातें, ये किसी भी प्रकार के संदर्भ में हो सकती हैं, जो कक्षा की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है।

और निस्संदेह, युवा कोई महज़ बच्चा नहीं है। नीतिवचन की किताब में युवा, शब्द नार, हमेशा किसी को संदर्भित करता है, कम से कम किशोरावस्था में, कोई ऐसा व्यक्ति जो वयस्कता के समय में प्रवेश कर रहा है, और कोई ऐसा व्यक्ति जिसे समाज के काम करने के तरीके को सीखने की जरूरत है। और इसलिए बुद्धि इस प्रकार की वास्तविकता देती है।

यह सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक शिक्षा है। और जैसा कि हम नीतिवचन और इसके विभिन्न संकेतों से देखते हैं, टोरा, मूसा की शिक्षा, इस सभी निर्देश के लिए मौलिक थी। जो सीखना था वह वे बुनियादी बातें थीं जो भगवान ने अपने पिता और अपनी माँ का सम्मान करने, हत्या न करने, चोरी न करने, व्यभिचार न करने आदि के बारे में कही थीं।

ये सभी मूलभूत मूल्य वे चीज़ें हैं जो माता-पिता को अपने बच्चों को सिखानी होती हैं। अब युवाओं के सामने बहुत बड़ी चुनौती है। युवाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती हमेशा उनके दोस्त होते हैं।

सभी युवा स्वीकार किये जाना चाहते हैं। यही उनकी चाहत है। इसलिए, वे अपने परिवारों और प्रियजनों में एकीकृत होना चाहते हैं।

लेकिन अपने परिवार के बाहर, वे स्वीकृति चाहते हैं। अब, यह एक वास्तविक समस्या बन जाती है यदि, वास्तव में, परिवार इकाई टूट जाती है और बच्चों को माता-पिता की उस तरह देखभाल नहीं मिलती है जैसी उन्हें मिलनी चाहिए। हालाँकि, इस मामले का दूसरा तथ्य यह है कि हम सभी के दिल में यह प्रलोभन जुड़ा हुआ है कि हम स्वयं निर्णय लें कि क्या अच्छा है।

हम तय करेंगे कि क्या सही है और क्या ग़लत है। और निःसंदेह, जब हम ऐसा करते हैं, ईश्वर के भय और ज्ञान से स्वतंत्र होकर, विकल्प हमेशा बुरे होंगे। और इसलिए, यहां हमारा यह पहला व्याख्यान ऐसा है जिसमें हमें अपने दोस्तों की पसंद के बारे में सावधान रहने की जरूरत है।

हम जो मित्र चुनते हैं वे कभी-कभी एक समूह बन जाते हैं। इन्हें हम एक गुट कह सकते हैं। लेकिन कभी-कभी वे अधिक भयावह होते हैं।

हम उन्हें गिरोह कहते हैं। और गिरोह अपने हित पर आमादा है। यह परिच्छेद सबसे ग्राफिक तरीके से एक गिरोह की प्रकृति, उसके मूल्यों और यह कैसे काम करता है, इसका वर्णन करता है।

और इस अर्थ में, उस समय पिता की बात के बाद से जब यह कहावत हमारे वर्तमान दिन तक एक साथ लाई गई थी, इसमें थोड़ा भी बदलाव नहीं आया है। गिरोह क्या वादा करता है? खैर, उन्होंने कहा, हम आपके दोस्त हैं। हम तुम्हें साथ देने जा रहे हैं।

इसके अलावा, हम एक साथ रहेंगे। हमारे पास पैसों का एक बड़ा थैला होगा और हम उसे बाँटेंगे। और हमें पैसों का यह बड़ा थैला कैसे मिलेगा? ठीक है, आप इसे उन लोगों से लें जिनके पास यह है।

आप इसे और कहां से प्राप्त करने जा रहे हैं? और इसलिए, यहां दो खंडों में पिता फिर बेटे को चेतावनी दे रहा है। यहाँ अपील है। यहाँ विधि है।

लेकिन यह परिणाम है। ये हिंसक गिरोह उनकी हिंसा का शिकार बनते हैं। जब आप तलवार से जीते हैं, तो आप तलवार से ही मरते हैं, मेरा मानना है, इसे कहने का यह एक तरीका है।

और इसलिए, संक्षेप में, हिंसा एक जाल है। अब, यहाँ कुछ प्रश्न हैं कि श्लोक 17 की व्याख्या एक रूपक के रूप में कैसे की जानी चाहिए। यह एक पक्षी और जाल के बारे में क्या कह रहा है? क्या यह कह रहा है कि यदि पक्षी आपको जाल बिछाते हुए देखता है, तो वह स्पष्ट रूप से दूर रहेगा? या क्या यह कह रहा है कि आप पक्षी को देखते समय उसके ठीक सामने जाल बिछा सकते हैं, और फिर भी वह सीधे उसमें उड़ जाएगा? यह कहावत वास्तव में दोनों तरह से पढ़ी जा सकती है।

लेकिन मुझे बाद वाला तरीका पसंद है क्योंकि मुझे लगता है कि यह अधिक सच है। मेरे पिता जानवरों को फँसाते थे। कोई जानवर आपको जाल बिछाते देखकर नहीं घबराता।

अधिकांश समय, वे शांत रहते हैं... आप एक बाँध देते हैं... ठीक है, हम खरगोशों को फँसाते थे। मुझे एहसास है कि इन दिनों कुछ लोगों के लिए यह बहुत भयानक बात हो सकती है, लेकिन यह वह तरीका था जिससे हमने उन्हें मुर्गियों को खिलाने के लिए पकड़ा था। परन्तु खरगोश आप पर जाल बाँधने पर कोई ध्यान नहीं देता।

यह बिल्कुल भी कोई समस्या नहीं है। और वह अभी भी सीधे इसमें भाग जाएगा। और मुझे लगता है कि पक्षियों के लिए जाल बिछाने के बारे में यहाँ कहावत यही कह रही है।

आप जाल लगा सकते हैं, और आप उसमें बीज बिखेर सकते हैं, और पक्षी आपको ऐसा करते हुए देख सकता है। वह इससे बेखबर है। वह सीधे उसमें उड़ जाएगा और पकड़ा जाएगा।

अब, मेरे लिए, गिरोह के साथ जो होता है उसकी यह सबसे अच्छी तस्वीर है। आप बता सकते हैं कि इस गिरोह के सदस्य, इस गिरोह के सदस्य, इस गिरोह के सदस्य के साथ क्या होता है और उनका कितना भयानक अंत होता है, और उनके दुखद परिणाम क्या होते हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह व्यक्ति फिर भी गिरोह में शामिल हो जाएगा।

ऐसा हमेशा होता है। यही तो पिता की चिंता है। इसलिए, वह चिंतित है कि यह धोखा न हो।

गिरोह के ये सदस्य, अंततः, अपनी ही जिंदगी दांव पर लगाते हैं। उनका लालच उन्हें नष्ट कर देगा। यह हमें उस मूर्ख की समस्या की ओर ले आता है, जिसमें प्रभु का भय ही नहीं है।

और यह वास्तव में, जैसा कि हम नीतिवचन में सीखते हैं, लगभग हर किसी के साथ होता है। और हम इसे यहां लेडी विजडम की पुकार से देखते हैं, जो अध्याय 1 में श्लोक 20 से 33 तक है। अब, एक प्रकार की चिस्टिक संरचना है, जैसा कि हम इसे कहते हैं। दूसरे शब्दों में, यह शुरू होते ही समाप्त हो जाता है और एक मुख्य बिंदु तक विकसित होता है।

और मुख्य बिंदु वह है जो ठीक बीच में है। इस मामले में, यह लेडी विजडम के आह्वान के छंद 26 और 27 हैं, जिसमें, जब विपत्ति आती है, तो बुद्धि वास्तव में कहने के अलावा कुछ नहीं कर सकती है, मैंने तुमसे ऐसा कहा था। युवा गिरोह में शामिल हो सकते हैं, और युवाओं को गिरोह में शामिल होने के परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

और क्या कहा जा सकता है? खैर, इससे ज्यादा कुछ नहीं, मैंने आपको ऐसा बताया था। यही इस बिंदु का, इस आह्वान का सार है, जिसमें लेडी विजडम हर किसी से अपील करती है। लेकिन वह सभी को आकर्षित करती है।

वह जनता के बीच है। वह चौराहे पर है, गेट की सड़कों पर है। प्रत्येक शहर, एक प्रमुख शहर, चारदीवारी से घिरा होता है।

और इसलिए, इसमें एक आवश्यक प्रवेश द्वार है जो शहर के अंदर हर किसी की सुरक्षा करता है। और उस प्रवेश द्वार पर, आपको हर आने-जाने वाले पर नज़र रखनी होगी। आप जानना चाहते हैं कि दुश्मन शहर में घुसपैठ कर रहे हैं या नहीं।

और इसलिए, इसमें कुछ खुली जगहें हैं, और इसके गेट के प्रत्येक तरफ विभिन्न कार्यालय हैं जहां आप शहर के बाहर होने वाले लेनदेन और व्यवसायों से निपट सकते हैं। और फिर, गेट से, रास्ते शहर के विभिन्न क्षेत्रों की ओर मुड़ जाते हैं। और यह वहीं है, उस कोने पर, उस मोड़ पर, उस सिर पर, जैसा कि ये छंद कहते हैं, कि लेडी विजडम अपनी अपील कर रही है।

और वह भोले-भाले लोगों से कह रही है कि उन्हें बड़ा होना चाहिए। वह बता रही है, वह उस अहंकार के खिलाफ चेतावनी दे रही है जो तिरस्कार करता है, या उन मूर्खों के खिलाफ जो सोचते हैं कि वे पहले से ही सब कुछ जानते हैं। वह उन्हें सुधार की ओर लौटने के लिए बुला रही है।

क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, यदि वे ज्ञान को खारिज कर देते हैं, तो उसका हाथ पहले ही फैला हुआ है। यह एक चेतावनी है। वे इस सुधार और सलाह को अस्वीकार कर रहे हैं जो वह दे रही है।

यह विनाशकारी होने वाला है। और इसलिए, तिरस्कार और उपहास आने वाला है। उनका निधन एक तूफान की तरह खड़ा होने वाला है।'

विपत्ति का दिन संकट का दिन और पीड़ा का दिन बन जाता है। तो, मूर्खों का भाग्य यह है कि उन्होंने प्रभु का भय न मानने की गलती की है। वास्तव में वह मूर्ख को चेतावनी देकर बुद्धिमानों को बुला रही है।

वह उनका हौसला बढ़ा रही हैं। वह उनसे ध्यान देने को कह रही है। उसे वास्तव में मूर्ख से कोई आशा नहीं है।

क्योंकि एक बार जब उन्होंने यह निर्णय ले लिया, एक बार जब उन्होंने प्रभु के भय को अस्वीकार कर दिया, तो वे सुधार योग्य नहीं हो गए। अब, निःसंदेह, यह कोई पूर्ण नियम नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि जो लोग सही रास्ते पर चले गए हैं वे कभी भी अपने जीवन की दिशा नहीं बदलते हैं और प्रभु का भय नहीं सीखते हैं।

लेडी विजडम यह नहीं कह रही है। लेकिन वह कह रही है कि यह नियम है। नियम यह है कि एक बार जब आप जीवन में अपना पाठ्यक्रम निर्धारित करते हैं, तो यह बहुत असामान्य हो जाता है कि वह बदल जाए।

अपवाद उस अर्थ में नियम को सिद्ध करता है। और इसलिए, जो चीज़ शुरू होनी चाहिए वह है प्रभु का भय और सुधार जो इस शिक्षा के साथ आता है। मानव की समझदारी अपने आप में त्रुटिपूर्ण है।

इसे अस्वीकार करने वाले व्यक्ति की हानि के लिए इसे अस्वीकार कर दिया जाता है। मूर्ख गलत रास्ते पर भटकने के कारण मर जाएगा। लेकिन आज्ञाकारी, और यह महत्वपूर्ण बिंदु है, वे हैं जो आश्वासन के साथ जीने वाले हैं।

और इसके विपरीत, वे सुरक्षा के साथ रहेंगे क्योंकि उन्हें आने वाले मुसीबत के दिन से डरने की ज़रूरत नहीं है।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कुंकल हैं। यह सत्र संख्या तीन है, व्याख्यान एक, द गैंग, द कॉल ऑफ लेडी विजडम।